मथुरादास की डायरी • मुद्राराक्षस

जगतराम एण्ड सन्स
मेन बाजार, गांधी नगर, दिल्ली-110031

© मुद्राराक्षस

प्रकाशक

जगतराम एण्ड संस
IX/221, मेन बाजार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण

1992

मूल्य

पचास रुपये

मुद्रक

अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

MATHURADAS KI DIARY (Humour & Stire)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अनुक्रम

परनिंदा सुख उर्फ एरिस्ट्रोक्रेट झाड़ू	7
पुरस्कार प्रसंग	10
सावधान ! आगे जनवादी रेजीमेंट है	14
अध्यक्षता का आनन्द	19
अथ श्री दिल्ली पुलिस पुराणम्	23
काशी विश्वनाथ : शासकीय नियमावली	27
विधायक बिकाऊ हैं···!	32
आलोचना के खतरे	37
ऋणंकृत्वा चर्बी पिवेत	41
पड़ता सिद्धान्त	46
चुनाव चक्र और एकता	51
उत्तर प्रदेश का कीर्तिमान	55
व्यंग्यकार की मेख	59
गरीबी की रेखा के इधर और उधर	64
समीक्षा सुख	68
टेढ़ा उल्लू	72
बड़ा क्या है : सच्चा सुख या सत्ता सुख	77
हिन्दी की शुभचिन्तक	82
ब्लेड युग की साहित्यिक हरकतें	87
बड़े बनने का गुर !	91
भारत भवन से मथुरादास की अपील	96
कम्प्यूटर क्रान्ति	101
उपदेशक की जमीन	105

गरीबी की रेखा के इधर और उधर

मथुरादास इन दिनों थोड़ी उलझन में रहे। वे गरीबी की रेखा खोज रहे थे। चुनावों की हवा चल पड़ी है। अब चुनाव में गरीबी की रेखा का बड़ा महत्त्व है। चुनाव के दिनों में पहले नालियों की सफाइयाँ होती थीं, थोड़ी-बहुत सड़कें बनती थीं। मथुरादास के मुहल्ले में पहली और आखिरी बार बिजली का लट्टू चुनाव के दिनों में ही लगा था। कभी-कभी कुएँ खुद जाते हैं या पुल भी बन जाते हैं। मगर अब चुनाव जरा जटिल प्रक्रिया हो गया है। पुल बनाने से काम नहीं चलता। चुनाव की शर्त है गरीबी की रेखा से नीचे के लोगों को ऊपर लाना। मथुरादास इस बार खुद चुनाव लड़ना चाहते थे। वे घबराए हुए पार्टी के दफ्तर गए।

उन्हें पता नहीं था कि चुनाव जीतना है तो पार्टी के दफ्तर से पहले फटाफट गरीबी की रेखा के नीचे खिसक लेना चाहिए। मथुरादास की बस्ती के पड़ोस में एक छोटा-सा गाँव है। सबसे पहले वहाँ के ग्राम-प्रधान का भाई गरीबी की रेखा के नीचे खिसक लिया। उसके बाद चवालीस हेक्टेयर गन्ना उगाने वाले सुगनचन्द भी खिसक कर वहीं पहुँच गए। तब मोटूसाह हलवाई और लेनदेनराम आढ़तिया भी वहीं आ खड़े हुए।

इसके बाद ग्राम-प्रधान ने सरकार के आला अफसर को न्योता भेजा। अब लोगों को साहब की गवाही में गरीबी की रेखा के ऊपर लाया जाना था।

गाँव में डुग्गी पिटी—गरीबी रेखा के नीचे जो गरीब लोग हैं, सरकार उनकी गरीबी दूर करेगी। वे लोग गाँव की चौपाल में इकट्ठा हों।

चौपाल में लोग इकट्ठे हो गए, मगर वे सिर्फ छह थे। अफसर बहुत निराश हुआ। उसने कहा, "हमें इस गाँव में सौ आदमियों की गरीबी दूर करनी है। सिर्फ छह हैं। कैसे काम चलेगा!" अफसर का सहायक बोला,

"नहीं हुजूर, हुक्म तो दो सौ की गरीबी दूर करने का हुआ है।"

अफसर ने सहायक को डाँट दिया, क्योंकि सौ की गरीबी वह यहाँ आने से पहले ही दूर कर चुका था। अपनी बीवी से सौ अर्जियों पर अलग-अलग उँगलियों के निशान लगवाकर वह यहाँ आने से पहले ही अपने दामादश्री की गरीबी दूर करवा चुका था। उन अर्जियों से मिले कर्ज से उसने अपने दामाद को एक मोटर दिलवा दी थी। उससे पहले उसका दामाद इतना गरीब था कि एक मोटर साइकिल से काम चलाता था, लेकिन गाँव में सौ के बजाय सिर्फ छह आदमी मिले।

ग्राम-प्रधान ने उन्हें आश्वस्त किया, "आप चिन्ता न करें हुजूर, मेरा इन्तजाम पक्का होता है। यहाँ आदमी जरूर छह हैं, लेकिन अर्जियाँ सौ ही हैं।"

"लेकिन ये लोग सचमुच गरीबी की रेखा के नीचे हैं और कर्ज इन्हीं को मिलना चाहिए, यह साबित करने के लिए गाँव वालों की जरूरत होगी।" आला अफसर ने समझाया, "इन लोगों को हाथ उठाकर समर्थन करना होगा।"

ग्राम-प्रधान के सेवक यह सुनकर तत्परता के साथ आगे आकर बोले, "आप फिकर न करें हुजूर, वह इन्तजाम भी पक्का है। हमने एक अदद कट्टा गाँव में घुमा दिया था। सब लोग राजी हैं। हाथ उठा देंगे।"

आला अफसर थोड़ा नाराज हुआ, "आप लोग तमंचे के बल पर समर्थन करवाएँगे, यह तो गैर-कानूनी है।"

तब प्रधान ने शालीनता के साथ हस्तक्षेप करते हुए कहा, "श्रीमानजी, आप अप्रसन्न न हों। तमंचा हमने घुमाया जरूर था, लेकिन सिर्फ इस घोषणा के साथ कि इस शुभ अवसर पर कोई गड़बड़ी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। आप स्वयं देख लें, सब काम कितनी शान्ति से सम्पन्न हो रहा है।"

इस प्रवचन से सन्तुष्ट हुए आला अफसर ने घोषणा की, "गाँव के लोग सुनें। सरकार ने फैसला किया है कि गाँव में जो सबसे गरीब लोग हैं, उनकी सहायता की जाएगी। सबसे गरीब लोग सामने आएँ।"

प्रधान के चुने हुए छह गरीब लोग सामने आ गए। हाकिम ने गिनवाया। गिनने वाला चक्कर में पड़ गया।

प्रधान ने छह छाँटे थे, वहाँ सात थे। "सातवाँ गरीब कौन आ गया रे?" प्रधाम बौखला गया। सारे लोग पड़ताल में जुट गए। प्रधान भिन्ना रहा था, "मैंने तो छह गरीब छाँटे थे। ऐसा घोटाला कैसे हो गया?"

खोजने पर मालूम हुआ कि छाँटे गए छह गरीबों में प्रधान के यहाँ बेगार करने वाला घुरहू भी घुस लिया। उसके पास न अपनी झोंपड़ी थी, न अपना खाना। जहाँ जो मिल जाए, खा लेता था। जहाँ जगह मिले, सो रहता था। उसने घोषणा सुनी तो वह भी उन्हीं में शामिल हो लिया। प्रधान और साहूकार ने उसे जोर से घूरा। दारोगा फौरन उसे बाहर खींच लाया।

दारोगा ने घुरहू को बड़ी आसानी से गरीबी की रेखा के दूसरी ओर खींच लिया। हाकिम ने पूछा, "यह क्या माजरा है? तुम कौन हो जी?"

घुरहू ने हाथ जोड़कर कहा, "मैं बड़ा गरीब हूँ साहब, घुरहू नाम है। बेगार करता हूँ।"

"यह झूठ बोलता है साहेब, प्रधान का लठैत चिल्लाया, "ये गरीब नहीं है। बड़ी मौज में है।"

"नहीं हुजूर, मैं बड़ा गरीब हूँ।" घुरहू फिर घिघियाया।

"हूँ, इसका फैसला ऐसे नहीं होगा। गाँव के सब लोग हाथ उठाकर बताएँ कि घुरहू गरीब है या नहीं।" हाकिम ने घोषणा की।

"यह बात ठीक है," प्रधान अपने लठैतों से बोला, "सब लोगों से हाथ उठवाकर कहला दो कि घुरहू गरीब नहीं, अमीर है। और ध्यान रहे, तमंचा किसी को न दिखाना। सब काम स्वेच्छा से होना चाहिए।"

लठैत तुरन्त चारों तरफ फैल गए। लठैतों ने कहा, "गाँव वाले समझ लें, गड़बड़ी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बोलो, "घुरहू गरीब है कि नहीं।"

लोगों ने एक बार लठैतों की तरफ देखा और एक स्वर में बोले, "नहीं, घुरहू गरीब नहीं, अमीर है।"

घुरहू रोने लगा। उसने हाकिम से कहा, "हुजूर, ये लोग झूठ बोल रहे हैं। इन्होंने लठैतों के डर से मुझे अमीर बताया है।"

प्रधान फौरन सामने आया, बोला, "हुजूर, ये विरोधी दल का है। गड़बड़ी फैला रहा है। लठैत तो सिर्फ इसलिए थे कि यहाँ बदइंतजामी न

फैले और मतदान में लोगों पर कोई बेजा दबाव न पड़े।"

हाकिम सन्तुष्ट हुए। थानेदार ने घुरहू को न सिर्फ गरीबी की रेखा से बाहर कर दिया, बल्कि गाँव से भी खदेड़ दिया। इसके बाद जयकारे के साथ गाँव के गरीबों को गरीबी की रेखा से ऊपर लाने का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और देखते-ही-देखते नाहरसिंह प्रधान के भाई से लेकर सुगनचन्द और लेनदेनराम तक की गरीबी दूर हो गई।

उन्होंने इमदाद में मिली रकम से कुछ कार्बाइनें खरीदीं और स्थान-स्थान पर डकैती डालते हुए सुखपूर्वक दिन बिताने लगे।

ये गरीब मतदान में बहुत काम आते हैं। चुनाव हो तो कार्बाइन राम-बाण साबित होती है। उससे मतदाता तो घर पर बैठे रहते हैं और बूथ पर वोट पड़ते रहते हैं। उससे भी काम न चले और विरोधी दल धूर्तता पर उतर आएँ अर्थात् घरों से लोगों को वोट डालने के लिए निकाल ही लें तो बूथ पर कृपापूर्वक अधिकार करके पूरी मतपेटी सुरक्षित उठवाने का काम यही गरीब आदमी करेंगे। इससे जीत सुनिश्चित होती है।

मथुरादास ने अपनी यह रपट लिख तो डाली थी, मगर वे हरिशंकर परसाई को खोजते रहे। परसाई इस बीच बहुत व्यस्त थे। कई जगह इसी बीच उन्हें पुरस्कार लेने भी जाना था। इसलिए मथुरादास भटकते रहे। इधर वे पूरी तरह सहमत हो गए हैं कि देश में अगर कोई भ्रष्ट है तो लेखक। सरकार बिलकुल ठीक-ठाक है। अगर कहीं गड़बड़ी है तो जनता अपना दायित्व निभाए। सरकार को लोग नाहक बीच में घसीटते हैं।

हरिशंकर परसाई से प्राप्त शुद्धिपत्र बाद में भेजेंगे।